सारांश

* इस कहानी 'अहिंसा के दूत' में हमें गांधी जी के

Tuesday

बचपन के बारे में जानने की लीला। गांधी जी को बचपन में पेड़ों पर चढ़ना बहुत ही ज्यादा अच्छा लगता था। परंतु उनके पिता को लगता था कि छोटा बच्चा है कहीं पेड़ से गिर गया तो। इसलिए पिताजी उसे हमेशा मना करते थे।

* एक दिन मोहन सबसे छुपकर पेड़ पर चढ़ रहा था। परंतु उनके बड़े भाई ने उन्हें देख लिया। वे तुरंत वहीं गए और गांधी जी को नीचे गिरा दिया। उनके उठते ही उन्होंने उसे गुस्से से दो-चार चप्पड़ मार दिए। मोहनदास रोते हुए अपनी माँ के पास गए।

* उन्होंने कहा देखो माँ बड़े भाई ने हमें मारा। माँ ने कहा तुमने कोई शरारत की होगी। मोहनदास ने कहा नहीं माँ शरारत नहीं की बस पेड़ पर चढ़कर हवा का आनंद ले रहा था। माँ ने कहा इसका मतलब भाई ने तुम्हें बेवजह मारा। तुम भी जाकर भाई

को थप्पड़ मार आओ।

* माँ से यह बात सुनकर मोहनदास दुखी हो गए। उन्होंने कहा आप मुझे भैया को मारने के लिए क्यों बोल रहे हैं। वे मुझसे बड़े हैं। माँ ने कहा भाईयों के बीच तो ऐसी नोक-झोंक होती ही रहती है। मोहनदास ने माँ से कहा नहीं माँ आप दूसरों को नहीं रोकती और मुझे मारना सिखाती हैं। वे मुझसे बड़े हैं, मैं उनके थप्पड़ का जवाब थप्पड़ से नहीं दे सकता। मोहनदास के मुँह से माँ यह बात सुनकर हैरान रह गई। माँ ने कहा तुने यह सब कहाँ से सीखा। पता नहीं भगवान ने तेरे लिए क्या लिखा है। हमें गांधीजीकी यह बात सीखनी चाहिए।